एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

गाजरघास: किसानो के लिए खतरे की घंटी

(*मुकेश कुमार यादव)
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर (महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर)
* mukesh6161yadav@gmail.com

गाजर घास एक खरपतवार है, जिसका वैज्ञानिक नाम पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस है। यह खरपतवार कम्पोजिटी कुल की होती है और हूबहू गाजर पौधों जैसी दिखती है। इसे कैरट ग्रास, कांग्रेस घास और क्षेत्रीय भाषा में सफेद टोपी चटक चांदणी आदि नामों से भी जाना जाता है। यह एक वर्षीय शाकीय पौधा है, जिसकी लम्बाई लगभग 1.0 से 1.5 मी. तक हो सकती है। हर एक गाजर घास खरपतवार लगभग 1000–5000 बहुत ही छोटे छोटे बीज पैदा करता है। वैसे तो यह घास हर तरह के वातारण में उग जाती है मगर नम और छायादार स्थानों पर अधिक तेजी से उगती है।

गाजर घास के दुष्प्रभाव

यह खरपतवार न केवल फसलों के उत्पादन को प्रभावित करता है वल्कि मनुष्य एवं पालतू पशुओं के स्वास्थ्य लिए भी गंभीर खतरा पैदा कर रहा है। खेतों में फैलकर गाजर घास शीघ्र बढ़कर फसलों और फलोद्यान के पौधों के साथ स्थान, प्रकाश, नमीं और पोषक तत्वों के साथ प्रतिस्पर्धा कर उनकी उपज और उत्पाद की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। इसकी वजह से फसल उपज में 30–50 % से अधिक हॉनि हो सकती है। रासायनिक दृष्टि से गाजर घास की पत्तियों और फूलों में सबसे अधिक मात्रा में 'पार्थेनिन' (सर्वाधिक 0.33 %) तथा 'कोरोनोपिलिन' नामक रसायन पाये जाते है। इन योगिकों में एलर्जी पैदा करने वाले गुणों की पुष्टि हो चुकी है। इस घास में विद्यमान रसायन आसपास की फसलों एवं वनस्पतियो की वृद्धि को रोक देते है। इसके अलावा मानव स्वास्थ्य पर भी इसका प्रतिकूल एवं हानिकारक प्रभाव पड़ता है। शारीर से छू जाने पर त्वचा पर खुजली और तीव्र जलन के पश्चात एलर्जी हो जाती है। इसके फूलों के पराग से मनुष्यों में श्वास सम्बन्धी बिमारियॉं जैसे दमा, ब्रान्काइटिस आदि पैदा होती हैं। खेत में गाजर घास की निंदाई–गुड़ाई करने में किसानों को स्वास्थ्यजन्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पशुओं में भी इस पौधे से त्वचा संबंधित बिमारियॉं होती हैं। गाजर घास मृदा में उपस्थित नाइट्रोजन स्थिरीकरण में सहायक राइजोबियम जीवाणुओं के विकास एवं विस्तार पर विपरीत प्रभाव डालता है। इसके कारण दलहनी फसलों में जड़ ग्रन्थियों की संख्या घट जाती है। यह पौधा जहॉं उगता है वहां यह पौधों की अन्य प्रजातियों को विस्थापित कर अपना एकाधिकार स्थापित कर लेता है जिससे जैव–विविधता को भी खतरा पैदा हो गया है। जाने अनजाने में गाजर घास के संपर्क में आजाने पर शीघ्र ही स्वच्छ जल से हाथ–मुंह धोना चाहिए। इससे एलर्जी की शिकायत होने पर चिकित्सक से संपर्क कर उपचार करना आवश्यक है।

गाजर घास पशु और मानव शरीर को भी नुकसान पहुंचाती है

गाजर घास न केवल फसलों में बल्कि मनुष्यों और पशुओं के लिए भी एक गम्भीर समस्या का कारण बनी हुई है। इस खरपतवार के लगातार सम्पर्क में आने से मनुष्य को डरमेटाईटिस एल्जिमा, ऐलर्जी, बुखार, दमा जैसी गंभीर रोग हो जाती हैं। पशुओं के लिए यह खरपतवार बहुत ही अधिक विषाक्त है। इसके खाने से पशुओं में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं, और दुधारू पशुओं के दुग्ध में कड़वाहट भी आने लगती है।

गाजर घास से रोकथाम कैसे करें

इसकी रोकथाम या नियंत्रण यांत्रिक विधि द्वारा की जा सकती है। नम जमीन में इस खरपतवार को फूल आने से पहले हाथ से उखाड़कर या खुरपी से हटाकर इकट्ठा करके जला देने से काफी हद तक इसका नियंत्रण किया जा सकता है

रासायनिक विधि से कैसे करें नियंत्रण

गाजर घास के रोकथाम के लिए बाजार में उपलब्ध शाकनाशियों का प्रयोग आसानी से किया जा सकता है। इन खरपतवारनाशी रसायनों में सिमाजिन, एट्राजिन, एलाक्लोर, डाइयूरोन सल्फेट तथा सोडियम क्लोराइड प्रमुख है।

•मक्का, ज्वार, बाजरा, गेहूं, धान, गन्ना, इत्यादि फसलों में प्रभावी नियंत्रण हेतु एट्राजिन 1.0–1.5 किग्रा प्रति हेक्टेयर बुवाई के तुरन्त बाद तथा अंकुरण से पूर्व 500 लीटर साफ पानी में घोल कर छिड़काव करें।

•2, 4–डी एक किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के 25–30 दिन बाद प्रयोग करें।

•मेट्रीब्युजिन 500–750 ग्राम को प्रति हेक्टेयर 500 लीटर पानी के साथ छिड़काव करके प्रयोग किया जा सकता है।

•खाली जमीन में में गाजरघास की किसी भी अवस्था में ग्लाइफोसेट 1.0–1.5 किग्रा प्रति हेक्टेयर 500 लीटर पानी के साथ स्प्रे करें।

•सोडियम क्लोराइड 15: तथा अमोनियम सल्फेट 20: का घोल घास के फूल आने तक कभी भी 500–600 लीटर पानी में घोल बनाकर खेतों में एक समान रूप से छिड़काव कर देना चाहिए।

जैविक नियंत्रण द्वारा कांग्रेस घास का सफाया

- इसके सफाए के लिए ऐसे कीटों को रखा जाता है जो गाजर घास को अच्छी तरह नष्ट करने में सक्षम होते हैं, और अन्य उपयोगी फसल या वनस्पतियों पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं डालते। जून से अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े में बीटल कीट अधिक सक्रिय रहता है और 1 एकड़ के लिए लगभग 3 से 4 लाख कीटों की आवश्यकता होती है।
- केशिया टोरा, गेंदा, टेफ्रोशिया पर्पूरिया, जंगली चौलाई जैसे कुछ पौधों की बुवाई मानसून से पहले अप्रैल–मई में करने से गाजर घास ग्रसित क्षेत्र का प्रसारण कम होने लगता है।